एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सहभागी प्रसार (Participatory Extension) के माध्यम से जैविक खेती का संवर्धन

*राकेश पलसानिया, प्रियंका कर्दम एवं चेल्सी तोमर
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rakeshpalsaniya16@gmail.com

हरित क्रांति के बाद भारतीय कृषि में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से उत्पादन में वृद्धि तो हुई, परंतु इसके साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य, जल गुणवत्ता, जैव विविधता तथा मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिले। इन समस्याओं के समाधान के रूप में जैविक खेती (Organic Farming) एक टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल एवं स्वास्थ्य-सुरक्षित कृषि प्रणाली के रूप में उभरी है।

जैविक खेती को अपनाने में किसानों की सक्रिय भागीदारी, स्थानीय ज्ञान का उपयोग तथा सामूहिक निर्णय प्रक्रिया अत्यंत आवश्यक है। इस संदर्भ में सहभागी कृषि प्रसार (Participatory Extension) जैविक खेती के संवर्धन का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकता है।

जैविक खेती की अवधारणा (Concept of Organic Farming)

परिभाषा: "जैविक खेती वह कृषि प्रणाली है जिसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों एवं वृद्धि नियामकों का प्रयोग न करके जैविक इनपुट्स, प्राकृतिक संसाधनों तथा पारिस्थितिकीय संतुलन पर आधारित उत्पादन किया जाता है।"

जैविक खेती के प्रमुख सिद्धांत, मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण, जैव विविधता का संवर्धन, पर्यावरणीय स्थिरता ,मानव एवं पशु स्वास्थ्य की सुरक्षा

सहभागी प्रसार (Participatory Extension): अवधारणा एवं महत्व

परिभाषा: "सहभागी प्रसार वह प्रक्रिया है जिसमें किसान, वैज्ञानिक, प्रसार कर्मी एवं अन्य हितधारक मिलकर समस्याओं की पहचान, समाधान एवं तकनीकों के चयन में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।"

सहभागी प्रसार की विशेषताएँ, किसान-केन्द्रित दृष्टिकोण .स्थानीय ज्ञान का सम्मान
सामूहिक सीख (Social Learning) आत्मनिर्भरता एवं सशक्तिकरण

जैविक खेती एवं सहभागी प्रसार का अंतर्संबंध

जैविक खेती ज्ञान-प्रधान (Knowledge Intensive) प्रणाली है, जिसमें पारंपरिक अनुभव, स्थान-विशिष्ट तकनीकें एवं निरंतर प्रयोग की आवश्यकता होती है। सहभागी प्रसार इस प्रक्रिया को मजबूत करता है क्योंकि: किसान स्वयं प्रयोगकर्ता बनते हैं, नवाचारों का त्वरित प्रसार होता है जोखिम की सामूहिक साझेदारी होती है

सहभागी प्रसार के माध्यम से जैविक खेती को बढ़ावा देने की रणनीतियाँ

सहभागी ग्रामीण आकलन (PRA): किसानों की आवश्यकताओं की पहचान ,स्थानीय संसाधनों का मूल्यांकन एवं जैविक खेती की उपयुक्त रणनीति का चयन

किसान-क्षेत्र विद्यालय (Farmer Field School – FFS): जैविक कीट एवं रोग प्रबंधन कम्पोस्ट, जीवामृत, बीजामृत का निर्माण एवं खेत पर सीखने की प्रक्रिया

सहभागी परीक्षण एवं प्रदर्शन (Participatory Technology Demonstration): किसान के खेत पर जैविक तकनीकों का परीक्षण एवं तुलनात्मक अध्ययन (जैविक बनाम पारंपरिक)

किसान-से-किसान प्रसार (Farmer to Farmer Extension): अग्रणी जैविक किसानों की भूमिका अनुभव साझा करना एवं स्थानीय नेतृत्व का विकास

स्वयं सहायता समूह (SHGs) एवं किसान उत्पादक संगठन (FPOs): सामूहिक प्रमाणन (Group Certification), जैविक उत्पादों का विपणन, लागत में कमी एवं लाभ में वृद्धि

संस्थागत समर्थन एवं सहभागी प्रसार

कृषि विज्ञान केंद्र (KVKs): जैविक खेती प्रशिक्षण, ऑन-फार्म परीक्षण (OFTs), फ्रंटलाइन प्रदर्शन

कृषि विश्वविद्यालय एवं ICAR: सहभागी अनुसंधान ,जैविक पैकेज ऑफ प्रैक्टिस एवं मानव संसाधन विकास

सरकारी योजनाएँ: परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY), राष्ट्रीय जैविक खेती मिशन (NMOF) एवं भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (BPKP)

सहभागी प्रसार आधारित जैविक खेती के लाभ

किसानों के लिए: उत्पादन लागत में कमी, आय में स्थिरता, ज्ञान एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि

पर्यावरणीय लाभ: मृदा कार्बन में वृद्धि, जल प्रदूषण में कमी एवं जैव विविधता संरक्षण

सामाजिक लाभ: सामुदायिक सहयोग, महिला एवं युवा सशक्तिकरण एवं पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण

चुनौतियाँ एवं सीमाएँ

रूपांतरण अवधि में कम उत्पादन ,प्रमाणन की जटिल प्रक्रिया ,बाजार तक सीमित पहुँच एवं तकनीकी मार्गदर्शन की कमी

भविष्य की दिशा एवं सुझाव

सहभागी डिजिटल प्रसार मंचों का विकास, जैविक खेती को पाठ्यक्रम में शामिल करना

समूह आधारित प्रमाणन को सरल बनाना एवं KVK-FPO-NGO नेटवर्क को सशक्त करना

निष्कर्ष (Conclusion)

सहभागी प्रसार के माध्यम से जैविक खेती का संवर्धन भारतीय कृषि को टिकाऊ, समावेशी एवं पर्यावरण-अनुकूल बनाने की दिशा में एक प्रभावी रणनीति है। जब किसान नवाचार की प्रक्रिया के केंद्र में होते हैं, तब तकनीकों का अपनाव तेज, स्थायी एवं प्रभावशाली होता है। अतः जैविक खेती के व्यापक प्रसार हेतु सहभागी प्रसार दृष्टिकोण को नीति एवं क्रियान्वयन दोनों स्तरों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

संदर्भ

1. FAO (2017). ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर और पार्टिसिपेटरी एक्सटेंशन। रोम।
2. प्रिटी, जे.एन. (1995). सस्टेनेबल एग्रीकल्चर के लिए पार्टिसिपेटरी लर्निंग। वर्ल्ड डेवलपमेंट।
3. स्वानसन, बी.ई. और राजलहटी, आर. (2010). एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन को मज़बूत करना। वर्ल्ड बैंक।
4. भारत सरकार (2022). परंपरागत कृषि विकास योजना गाइडलाइंस।
5. अल्टीरी, एम.ए. (2002). एग्रोइकोलॉजी: सस्टेनेबल एग्रीकल्चर का साइंस। CRC प्रेस।
6. सिंह, आर., और कौर, बी. (2016). एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन एजुकेशन। कल्याणी पब्लिशर्स।
7. ICAR (2021). भारत में ऑर्गेनिक खेती – स्टेटस और स्ट्रैटेजी।